भाषा-शिक्षण : एक अनुभव

छोटे लाल तंवर



जब हम भाषा-शिक्षण की बात करते हैं तो पुनः भाषा क्या है, भाषा कैसे सीखी जाती है जैसे सवाल हमारे मन में उठने लगते हैं। जब हम इन सवालों को समझने की बात करते हैं तो मोटी बात यह निकलकर आती है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है अथवा भाषा विचारों के आदान-प्रदान का जरिया है। जब हम भाषा को इतने सीमित अर्थों में देखते हैं तो फिर भाषा-शिक्षण के प्रति हमारा नज़रिया भी सीमित हो जाता है। कहने का आशय यह है कि विषय की प्रकृति के बारे में जिस सीमा तक हम सोच पाते हैं उसका प्रभाव उसके शिक्षण पर भी पड़ता है। हम यहाँ इस आधारभूत बहस के साथ, वर्षों से किए जा रहे भाषा-शिक्षण के तौर-तरीक़ों व उनसे जुड़े सरोकारों पर बात करेंगे। साथ ही बच्चों के साथ भाषा-शिक्षण के अनुभवों को भी साझा करेंगे।

आम तौर पर भाषाई कौशलों के विकास के उद्देश्यों के तहत जिस स्तर के प्रयास किए जाते हैं, यहाँ उसकी एक झलक देने का प्रयास किया जा रहा है। यह भाषाई उद्देश्यों की प्राप्ति में न केवल अवरोधक के रूप में दिखते हैं बल्कि शुरुआती वर्षों में भाषा विकास की सहज प्रक्रिया को भी हतोत्साहित करते हैं।

पढ़ने की तैयारी एवं शिक्षण के तौर-तरीक़े

आम तौर पर कक्षा प्रथम और तो और पूर्व-प्राथमिक शालाओं में जब बच्चे आते हैं तो उन्हें पढ़ने हेतु वर्णमाला का ज्ञान इस समझ के साथ कराया जाता है कि वर्णमाला सीखने के बाद ही बच्चे पढ़ने के कौशल का विकास कर पाएँगे। जबकि तीन साल का छोटा बच्चा जब चित्र वाली किताबों के सम्पर्क में आता है तो चित्रों को देखते हुए पढ़ने का नाटक करना शुरू कर देता है परन्तु बहुत कम लोग बच्चे के इस तरह के प्रयासों को महत्त्व देते हैं।

लिखना सीखने की तैयारी

धारणा ये है कि जब बच्चा वर्णमाला व मात्रा ज्ञान प्राप्त कर लेगा तब धाराप्रवाह पढ़ने लगेगा। उसके बाद ही लिखने के कौशल पर काम किया जा सकता है, उससे पहले नहीं। हम अधिकांश वयस्क, बच्चों के चित्र बनाने को लिखने की तैयारी का हिस्सा नहीं मानते जबकि चित्र बनाना लिखना सीखने की तैयारी का अहम हिस्सा है।

बोलने व सुनने की क्षमता का विकास

वयस्क लोगों को यह भी लगता है कि जब बच्चे उच्च-प्राथमिक, माध्यमिक व महाविद्यालयों में जाएँगे तो सुनने-बोलने की क्षमताओं का विकास सहज रूप से कर लेंगे। छोटे बच्चों के साथ सुनने-बोलने की क्षमताओं पर अलग से काम करने की ज़रूरत नहीं है। भाषा विकास के बारे में ये धारणा अकादमिक रूप से ऐसी खाई उत्पन्न करती है जो सही मायने में सीखने का सामर्थ्य भी नहीं देती, बल्कि सोचने-समझने की तार्किक समझ का आधार भी नहीं बनने देती। भाषाई दक्षताओं के विकास को इस तरह से विखण्डित रूप में देखना व उनके विकास हेतु काम करने का नज़रिया भाषाई विकास को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करता है। जब हम भाषा के विकास को समग्रता में नहीं देखते तो भाषा के सभी कौशलों पर काम करने की आवश्यकता नहीं लगती, बल्कि ऐसा लगता है कि सुनने-बोलने के कौशल तो अपने-आप समय के साथ विकसित किए जा सकते हैं। इस पूरे प्रसंग में ये लगता है कि भाषा एवं भाषा-शिक्षण को लेकर उपरोक्त वर्णन में कुछेक बुनियादी समस्याएँ हैं। उन पर काम किए बिना हम भाषा-शिक्षण के अपेक्षित लक्ष्यों की तरफ नहीं बढ़ सकते।

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक में बच्चों के साथ काम के दौरान हुए अनुभवों में इन सभी प्रसंगों को स्थान दिया है। साथ ही बच्चों के साथ काम करते हुए भाषा सीखने के सैद्धान्तिक आयाम की भी पुष्टि हुई है जो शिक्षक को प्रेरित करने व अपने प्रयासों को और गहराई देने का हौसला देती है। इसे निम्न रूप में देख सकते हैं। हमें ऐसा लगता है कि भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि भाषा के माध्यम से ही हम विचार कर पाते हैं, तर्क कर पाते हैं, अवधारणाएँ बना पाते हैं, चीज़ों को जान पाते हैं। साथ ही प्रकृति में मौजूद सभी वस्तुओं, जीवों व इंसानों के साथ रिश्ता बना पाते हैं। जब हम भाषा को इस रूप में देखते हैं तो बच्चों के साथ काम करने की शुरुआत नीरस वर्णमाला सिखाने से नहीं की जा सकती।

कक्षा प्रथम के बच्चों के साथ हिन्दी भाषा में काम के अनुभव व बच्चों में भाषा विकास का स्तर।

सुनने व बोलने के कौशलों पर काम – कक्षा प्रथम के बच्चों के सुनने व बोलने के कौशलों के विकास हेतु की गई गतिविधियाँ।

15-20 बाल-गीतों का संकलन व उन पर काम -

कक्षा की शुरुआत घेरे में बैठकर बाल-गीतों से करना। शिक्षक के द्वारा हाव-भाव के साथ बाल-गीत करवाना। बच्चों द्वारा दोहराना। दो-तीन दिन बाद जब कुछ बच्चों को करवाए गए बाल-गीत याद हो जाएँ तो उन्हीं बाल-गीतों को चार्ट में लिखकर बच्चों की पहुँच में लगा देना।

छड़ी या उँगली चलाते हुए बाल-गीत करवाना। दो-तीन बार उस बाल-गीत को उँगली या छड़ी चलाते हुए पढ़ने का अभ्यास देने के बाद जिन बच्चों को वह गीत याद हो जाए, उन्हें उँगली और छड़ी चलाते हुए बाल-गीत करवाने का मौका देना। जब बच्चे छड़ी चलाते हुए रिदम व भाषाई फ्लो के साथ बाल-गीत पढ़ते हैं तो यहाँ वे पढ़ने की बारीकियों को भी समझ रहे होते हैं। जैसे बाएँ से दाएँ शब्द-ध्वनियों पर केन्द्रित करते हुए पूरी पंक्ति को एक साथ पढ़ना, शब्दों का सही उच्चारण करना व ऊपर से नीचे पंक्तिबद्ध ढंग से बढ़ना आदि।

इसके साथ ही बच्चों के साथ बाल-गीतों में आए शब्दों पर बात करना व उनमें आए लिखित शब्दों का परिचय देना व उन्हें पढ़ने की शुरुआती प्रक्रियाओं से गुजारना। जब बच्चा आरम्भिक दिनों में ही पढ़ने के अनुभव से गुजरता है तो उसके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ता चला जाता है। साथ ही शिक्षक को भी बच्चों का आगे बढ़ने का फ्लो दिखने लगता है। हमें ये अप्रोच चमत्कारी प्रतीत होती है, जब कोई छह वर्ष का बच्चा बाल-गीतों के माध्यम से आरम्भिक तीन माह में पढ़ने की तरफ अग्रसर होने लगता है।

इसी दौरान 18-20 कहानियों का चयन करते हुए उन पर काम करवाना। शुरुआत में बच्चों को कहानी सुनने के लिए तैयार करना व चित्रकथाओं पर काम करना। इस प्रक्रिया में उनके परिवेशीय अनुभवों पर बात करते हुए उन्हें बोलने के लिए सहज करना।

जब बच्चे धीरे-धीरे कहानी सुनने लग गए उसके बाद उन कहानियों पर बात करने की शुरुआत की गई। यहाँ मैं बच्चों के साथ हुई बातचीत का जिक्र करना चाहूँगा। सुनाई गई कहानी का नाम है - '**मीता के जादुई जूते**'। बच्चों से पूछे गए प्रश्न कुछ इस प्रकार के थे जैसे –

"कैसी लगी कहानी?"

"अच्छी लगी।"

"सबसे अच्छा कौन लगा?"

"मीता।"

"कहानी में तुम्हें और कौन अच्छा लगा?"

"पंख वाले जूते।"

इसके बाद शिक्षक ने कहा, "यदि तुम्हें उड़ने वाले जूते मिल जाएँ तो तुम कहाँ-कहाँ जाना चाहोगे?" सभी बच्चों के जवाब बड़े दिलचस्प थे। कोई अपने पिता जहाँ काम करते हैं वहाँ जाना चाहते थे, जैसे दिल्ली, जयपुर, सउदी अरब, कोटा।

कुछ बच्चे अपने ननिहाल, बुआ या बहिन के ससुराल जाना चाहते थे। जब आप बच्चों के साथ उनसे जुड़ी भावनात्मक दुनिया में प्रवेश करते है एवं उनके मन की उड़ान को स्थान देते हैं तो बच्चे उनसे जुड़े अनगिनत सन्दर्भों को साझा करना चाहते हैं। कौन कहता है कि छह वर्ष के बच्चों के साथ सुनने व बोलने की दक्षताओं पर काम नहीं किया जा सकता। हमें यह लगता है कि बच्चों के साथ सुनने व बोलने, पढ़ने व लिखने की शुरुआत इसी स्तर पर किए जाने की ज़रूरत है। वरना बढ़ती उम्र के साथ बच्चे अलग तरह की चुप्पी की स्थिति में चले जाते हैं जो कई बार उन्हें स्थायी चुप्पी की ओर धकेल देती है।

बाल-गीतों, कहानियों को सुनाना, उन पर बात करना, अभिनय करना, चित्र बनवाना, उँगली चलाते हुए पढ़वाना, कहानियों व बाल-गीतों में आए मुख्य शब्दों को अलग-अलग ढंग से पढ़वाना, उपरोक्त प्रक्रिया को अपनाते हुए काम किया गया। इस काम के अनुभव से यह समझ में आया कि करीब दो-तिहाई बच्चे इस विधा के साथ काम करते हुए साल के अन्त में कक्षा के स्तर के टैक्स्ट को धाराप्रवाह पढ़ना सीख गए। अच्छी बात इस अनुभव की यह रही कि यह बच्चे शब्दों के हिज्जे करके नहीं पढ़ते थे बल्कि पूरे शब्द व वाक्य को एक साथ पढ़ते थे, जो पढ़कर समझने की बुनियादी शर्त है। साथ ही कहानियों व कविताओं के माध्यम से पढ़ने के कौशल पर काम करना न केवल समझ के साथ पढ़ने का अवसर देता है बल्कि पुस्तकें पढ़ने व बच्चों के अच्छे पाठक बनने की सम्भावनाएँ भी खोलता है। इसके अलावा 30-35 बाल-गीतों के अच्छे संग्रह के साथ-साथ 15-20 छोटी कहानियों पर बात करना व अपनी भाषा तथा अपने-अपने अन्दाज़ में सुनाना एवं उन पर अभिनय करना भी सीख गए।

अब दो वर्ष उपरान्त जब मैं उनमें से कुछ बच्चों के साथ बात करता हूँ तो उनमें ख़ास स्तर की भाषाई गहराई महसूस होती है। इसका कतई ये अर्थ नहीं है कि ये सारा प्रभाव प्रथम कक्षा में किए गए काम का ही है। परन्तु, प्रथम कक्षा में भाषा के स्तर पर दिया गया ऐक्सपोजर कहीं-न-कहीं उन बच्चों को भाषाई स्तर पर समृद्ध भाषाई अनुभव की अनुगूँज देता है, ऐसा मुझे लगता है।

जब दूसरी कक्षा में ही ये बच्चे कहानियों की 15-20 उन छोटी कहानियों की पुस्तकों का अनुभव कर चुके होते हैं जिन कहानियों पर इनके साथ काम हो चुका होता है तो सहज रूप

से बच्चे किताबें पढ़ने की तरफ लालायित होते नज़र आते हैं।

चुनौतियाँ व उपलब्धियाँ

वे बच्चे जो अलग-अलग कारणों से पढ़ना तो नहीं सीख पाए परन्तु सुनने व बोलने की क्षमता का असाधारण रूप से विकास कर पाए, जो किसी भी भाषा को सीखने के लिए अति आवश्यक है। इसका मतलब ये कतई नहीं है कि इन बच्चों ने कुछ भी नहीं सीखा बल्कि इन बच्चों ने भाषा के उन बुनियादी कौशलों पर अधिकार बनाने में महारत हासिल की जिस पर पर अमूमन बच्चे उच्च-प्राथमिक स्तर की कक्षा तक जूझते देखे जाते हैं और जो किसी भी भाषा को सीखने के लिए अति आवश्यक है।

छोटे लाल तंवर अगस्त, 2011 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले, उन्होंने बोध शिक्षा समिति के साथ अलवर जिले में लगभग 11 वर्षों तक समन्वयक एवं सुगमकर्ता के रूप में काम किया। उन्होंने वहाँ हिन्दी और गणित के लिए एक स्रोत व्यक्ति के रूप में भी काम किया। 15 छोटे स्कूलों को अच्छे स्कूल के रूप में स्थापित करने के लिए उन्होंने शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदायों के साथ मिलकर काम किया। इससे पहले उन्होंने लोक जुम्बिश परियोजना में भी काम किया है, जो राजस्थान सरकार द्वारा मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लागू एक प्रसिद्ध प्रयोगात्मक परियोजना है। उनसे chhote.lal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।